महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

मानविकी एवं भाषासंकाय

संस्कृतविभाग

एम. ए. द्वितीय सत्र

विषय – उत्तररामचरित

Code – SNKT2002

उपविषय – उत्तररामचरित का सामान्य परिचय

विश्वजित् वर्मन
सहायक-आचार्य, संस्कृत विभाग

न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।

नासौ योगो न तत्कर्म नाट्येऽस्मिन् यन्न दृश्यते॥

भरत मुनिप्रणीत नाट्यशस्त्र के इस वचनानुसार नाटक ज्ञान-शिल्प-कला-विद्या-योग-कर्म आदि सकल ज्ञानराशियों का समन्वित रूप है। साहित्य शास्त्र के दृश्य-श्रव्य काव्यभेदों में दृश्यकाव्य के अन्तर्गत नाटक आनन्दप्रदायक है। वह आनन्दमार्ग से परम अलौकिक आनन्द को अनुभव कराता है। इसलिए कहते है कि **'काव्येषु नाटकं रम्यम्'**।

नाट्य साहित्य के अनेक प्रसिद्ध आचार्यों में महाकवि भवभूति अन्यतम हैं। उनके द्वारा रचित उत्तररामचरित नाटक अत्यन्त उत्कृष्ट है, जो सहृदयों को अवश्य ही सकल प्रकार से ज्ञान प्रदान करता है। जो कि नाटक का नायक भगवान श्रीराम का आदर्श, नायिका सीता की पवित्रता, लक्षण का भ्रातृत्व का विषय सभी भारतीयों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। साथ ही प्रकृति भी जिसमें पात्र के रूप में चित्रित है।

भवभूति का परिचय

कालिदास के समतुल्य भवभूति संस्कृत नाट्यसाहित्य के सर्वश्रेष्ठ नाट्यकार हैं। वे अपने परिचय देते हुए महावीरचरित की प्रस्तावना में लिखे हैं-

"अस्ति दक्षिणपथे पद्मपुरं नाम नगरम्। तत्र केचित्तैत्तिरीयाः काश्यपा श्चरणगुरव-पङ्क्तिपावनाः पञ्चाग्नयो धृतब्रताः सोमपीथिन उदुम्बरा ब्रह्मवादिनः प्रतिवसन्ति। तदामुष्यायणस्त तत्र भवतो बाजोययाजिनो महाकवेः पञ्चमः सूगृहीतनाम्नो भद्रगोपालस्य पौत्र ! पवित्रकीतीलकण्ठस्यात्मसंभवः श्रीकण्ठपदलाञ्छनो भवभूतिनीम जतुकर्णीपुत्रः कविमित्रधेयमस्माकमित्यत्र भवन्तो विदाकुर्वन्तु।"

श्रेष्ठः परम हंसानां महर्षीणामिवाङ्गिराः।

यथार्थनामा भगवान् यस्य ज्ञाननिधिगुरुः॥"

भवभूति विदर्भ देश के **'पद्मपुर'** नामक स्थान के निवासी श्री भट्टगोपाल के पोते थें। इनके पिता का नाम **नीलकंठ** और माता का नाम **जतुकर्णी** था। इन्होंने अपना उल्लेख **'भट्टश्रीकंठ पछलांछनी भवभूतिर्नाम'** से किया है। इनके गुरु का नाम **'ज्ञाननिधि'** था। वे कान्यकुब्ज के नरेश यशोवर्मन के सभापंडित थे। संस्कृत साहित्य में महान् दार्शनिक तथा नाटककार होने के कारण ये अद्वितीय हैं। पद, वाक्य और प्रमाण के ज्ञाता, पांडित्य और विदग्धता का यह अनुपम योग संस्कृत साहित्य में दुर्लभ है।

भवभूति का समय

महाकवि भवभूति ने अपना तथा अपने परिवार का परिचय अपने नाटकों में संक्षिप्त रूप से किया है। किन्तु समय का कुछ भी संकेत नहीं किया है। विभिन्न प्रमाणों के आधार पर भवभूति का समय 7वीं शताब्दी के अन्तिम भाग माना जाता है।

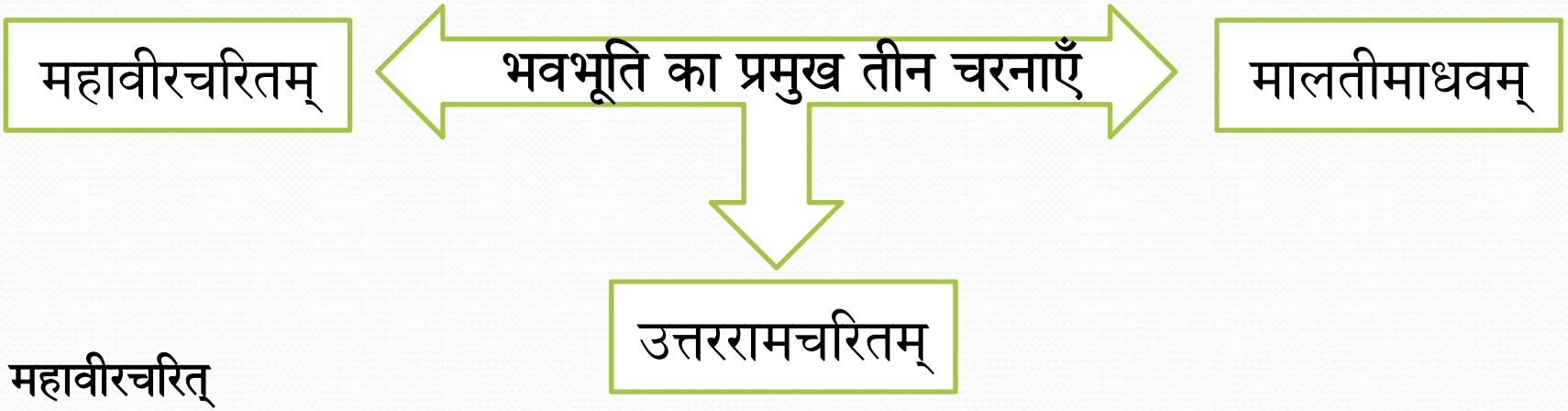

महावीरचरित्

इस नाटक में 7 अंकों में रामविवाह से लेकर राज्याभिषेक तक की कथा निबद्ध की गई है। कवि ने कथा में कई काल्पनिक परिवर्तन किए हैं। यह वीररस प्रधान नाटक है।

मालतीमाधव

यह 10 अंकों का प्रकरण है, जिसमें मालती और माधव की कल्पनाप्रसूत प्रेमकथा है। युवावस्था के उन्मादक प्रेम का इसमें उत्कृष्ट वर्णन है। इसमें स्थान स्थान पर प्रकृति का विशेष वर्णनचित्र प्राप्त होता है।

उत्तररामचरितम्

संस्कृत नाट्यसाहित्य में करुण रस की मार्मिक अभिव्यंजना में यह नाटक सर्वोत्कृष्ट है। इसमें सात अंकों में राम के उत्तर जीवन राज्य अभिषेक से चित्रित किया गया है जिसमें सीतानिर्वासन की कथा मुख्य है। रामायण के इस कथा का अंतर यह है कि रामायण का पर्यावसान (सीता का अंतर्धान) शोकपूर्ण है, किन्तु इस नाटक की समाप्ति राम सीता के सुखद मिलन से होता है।

इसमे 7 अंक है-

प्रथम अंक-	चित्रदर्शनम्
द्वितीय अंक	पंचवटीप्रवेशः
तृतीय अंक	छाया
चतुर्थ अंक	कौशल्याजनकयोग
पंचम अंक	कुमारविक्रमांकः
षष्ठ अंक	कुमारप्रत्यभिज्ञानम्
सप्तम अंक	सम्मेलनम्

श्लोक संख्या - 256

प्रथम अंक-	51
द्वितीय अंक	30
तृतीय अंक	48
चतुर्थ अंक	29
पंचम अंक	35
षष्ठ अंक	42
सप्तम अंक	21

नायक - राम
नायिका - सीता

रस - **करुण रस**

अलंकार
उपमा, उत्प्रेक्षा, काव्यलिंग आदि 35 अलङ्कारों का प्रयोग हा।

छन्द
अधिकांश श्लोक अनुष्टुप तथा शिखरिणी में है। कुल 19 छन्द का प्रयोग है।

उत्तररामचरित - कथासार

प्रथम अंक

रामराज्याभिषेक के अनन्तर जनक के चले जाने पर सीता उदास हो जाती है। राम उन्हें सांत्वना देते हैं। सीता के मनोविनोदार्थ लक्ष्मण ने राम के अब तक की जीवन की घटनाओं को लेकर एक चित्रपट तैयार करवाया है। सीता राम व लक्ष्मण के साथ उसे देखती हैं एवं चित्र दर्शन से उत्पन्न हुई भगवती भागीरथी में अवगाहन करने की अभिलाषा व्यक्त करती हैं। चित्र दर्शन के श्रम से थक कर सीता सो जाती हैं। इसी समय दुर्मुख नामक एक गुप्तचर सीता के सम्बन्ध में लोकापवाद का समाचार लेकर राम के पास उपस्थित होता है। इस समाचार को सुनकर राम को पीड़ा होती है। एक ओर राज-धर्म का प्रश्न और दूसरी ओर कठोरगर्भा सीता की अवस्था। अन्त में वे अपने कर्त्तव्य-पालन का निश्चय करते हैं। लोकरंजन के लिए अपनी प्राणप्रिया का परित्याग करने को कृतसंकल्प वह लक्ष्मण को सीता के निर्वासन का आदेश देते हैं। भागीरथी दर्शन की इच्छा तो सीता की थी ही इसी इच्छा की पूर्ति के बहाने वह निर्वासित कर दी जाती हैं।

द्वितीयग्रंक

इसमें आत्रेयी नामक तपस्विनी व वनदेवता (वासन्ती) के संवाद माध्यम से कई घटनाओं की सूचना दी जाती है। आत्रेयी महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में रहकर अध्ययन करती थी किन्तु वहाँ अध्ययन सम्बंधी विघ्न उपस्थित होने से दण्डक वन में आना पड़ा। वह महर्षि वाल्मीकि को किसी देव विशेष द्वारा दिये गये दो अद्भुत बालकों की सूचना देती है जो कुश और लव नाम के हैं एवं अत्यंत कुशाग्रबुद्धि होने से उनके साथ अपने जैसों की साथ-साथ पढ़ने की अयोग्यता बतलाती है। वह सीता के निर्वासन की सूचना भी आत्रेयी को देती है एवं राम के अश्वमेध यज्ञ के प्रारम्भ करने का भी समाचार देती है जिसमें राम हिरण्यमयी सीता की मूर्ति से धर्मचारिणी का काम लेंगे। तत्पश्चात् वह बताती है कि सीता का निर्वासन हो जाने के कारण दु:ख संतप्त भगवान वशिष्ठ, माता अरुन्धती और कौशल्या आदि मातायें दामाद के यज्ञ से लौटने पर अयोध्या न जाकर वाल्मीकि के आश्रम में पहुंच गयें। शम्बूक नामक शूद्र के दण्डकारण्य में तप करने की सूचना वासन्ती को उसके द्वारा प्राप्त होती है जिससे उसे राम के पुनर्दर्शन की आशा होती है। शम्बूक को खोजते हुये राम दण्डक वन में प्रवेश कर शम्बूक का वध करते हैं। दण्डकवन में प्रकृति की शोभा का अवलोकन करते करते राम सीता की स्मृति से अवसन्न हो जाते हैं। तत्पश्चात् राम पञ्चवटी में प्रवेश करते हैं।

तृतीय अंक

तमसा और मुरला सखियाँ परस्पर सम्भाषण में बताती हैं कि सीता जब लक्ष्मण द्वारा वाल्मीकि आश्रम के पास निर्वासित हुई तो लक्ष्मण के जाने बाद शोक विह्वल होकर गंगा में कूद पड़ी वहीं लव कुश का जन्म हुआ। गंगा और पृथ्वी सीता को रसातल संभाल कर ले गई बालकों को गंगा देवी ने महर्षि वाल्मीकि को सौंप दिया। इसके बाद सीता छाया रूप में प्रकट होती है। राम पंचवटी में प्रवेश करते हैं पर वे सीता को देख नहीं पाते। उनके हृदय में सीता विषयक विरह वेदना अत्यंत बढ़ी हुई है। अपने पुराने क्रीड़ास्थलों को देखकर राम मूच्छित हो जाते हैं, तब सीता अपने स्पर्श से उन्हें चेतन करती हैं। यद्यपि राम सीता को देख नहीं पाते पर उन्हें विश्वास हो जाता है कि यह स्पर्श सीता का ही है अन्य का नहीं। बात चीत के प्रसंग में वासन्ती राम को सीता के निर्वासन का उलाहना देती है। राम सीता के शोक में प्रमुक्त कण्ठ होकर विलाप करते हैं।

चतुर्थ अंक

वाल्मीकि आश्रम में दो तपस्वी बालक परस्पर बातचीत करते हुये आते हैं। यहाँ वशिष्ठ और अरुन्धती राम की माताओं के साथ पूर्व ही पा चुके थे। इसी समय जनक का आगमन होता है। वे सीता के निर्वासन के कारण अत्यन्त दुःखी हैं। अरुन्धती के साथ कौशल्या उनसे मिलने आती है। कौशल्या और जनक परस्पर सान्त्वना प्रदान करते हैं। इसी समय अन्य बालकों के साथ लव का प्रवेश होता है। कौशल्या और जनक को उसे देखकर उसे जानने की उत्कंठा जागृत होती है। लव आकर उनका अभिवादन करता है। वह अपना परिचय वाल्मीकि के शिष्य के रूप में देता है। विप्र वटु लव को इसी बीच अश्वमेध-अश्व के दर्शन करने के लिए बुलाते हैं। लव वहाँ जाकर अश्वरक्षकों की घोषणा श्रवण करता है। उसे सुनकर लव को क्रोध आता है और वह अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को पकड़ लेता है।

पञ्चम अंक

लव की बाण वर्षा से सैनिक विचलित हो उठते हैं इसी बीच कुमार चन्द्रकेतु युद्ध क्षेत्र में प्रवेश करते हैं। वे प्रथन दर्शन से ही सारथि सुमंत्र से लव की वीरता और क्रोध एवं ओजपूर्ण मुखश्री की प्रशंसा करते हैं। तदनन्तर दोनों का युद्ध प्रारम्भ होता है। लव जृम्भकास्त्र का प्रयोग करते हैं। उसे देखकर सुमंत्र और चन्द्रकेतु दोनों को विस्मय होता है। युद्ध विराम के बाद दोनों मिलते हैं तथा अनुराग का उद्भव होता है। बातचीत में ही सुमंत्र रामभद्र की चर्चा करते हैं। लव अपने इस कृत्य (अश्वग्रहण) में रक्षकों की पूर्ण 'राक्षसीवाणी' को ही कारण बताते हैं। पश्चात् लव एवं चन्द्रकेतु में परस्पर दर्पपूर्ण कथन होता है और दोनों युद्धक्षेत्र में पुनः उतरने के लिये प्रस्तुत होते हैं।

षष्ठ अंङ्कः

दोनों वीरों (लव तथा चन्द्रकेतु) के युद्ध का वर्णन एक विद्याधर और उसकी स्त्री के संवाद के रूप में किया गया है। इस युद्ध में वे परस्पर आग्नेय, वारुण और वायव्य अस्त्रों का प्रयोग कर रहे थे। इसी बीच शम्बूक को मार कर लौटते हुए रामचन्द्र युद्धस्थल में पहुचते हैं तथा युद्ध रुक जाता है। लव को देखकर राम वात्सल्य में नर उठते हैं। चन्द्रकेतु लव के द्वारा प्रयुक्त जुम्भकास्त्र के सम्बन्ध में राम को सूचित करते हैं यह ज्ञात कर राम को बड़ा आश्चर्य होता है। तब तक कुश भी प्रवेश करते हैं। दोनों राम का अभिवादन करते हैं और राम उनका आलिङ्गन करते हैं। दोनों बालकों के दर्शन से राम को सन्देह होता है कि क्या ये सीता के पुत्र हैं। कुश और लव से सीता परित्याग सम्बन्धी रामायण से कतिपय श्लोक श्रवण कर राम की वेदना और भी जागृत हो जाती है। सेना के साथ लव के युद्ध करने का समाचार सुन कर वशिष्ठ, वाल्मीकि, जनक, अरुन्धती और राम की मातायें वहाँ आती हैं। उनके आने के समाचर से राम को लज्जा व खेद भी होता है और वे बालकों के साथ उनका स्वागत करने आगे आते हैं।

सप्तम अङ्क

एक दिव्य नाटक का अभिनय होता है। परित्यक्ता सीता गंगा में कूद पड़ती हैं। किन्तु एक शिशु को गोद में ले कर भागीरथी और पृथ्वी सीता को जल से बाहर ले प्रकट होती हैं। पृथ्वी राम की कठोरता की निन्दा करती हैं। गंगा उसका कारण बतलाती हैं। दोनों सीता को आदेश देती हैं कि तुम इन शिशुओं का तब तक पालन करो जब तक वे वाल्मीकि मुनि के संरक्षण में रखने योग्य बड़े न हो जाते। इस दृश्य को वास्तविक समझकर राम शोकावेग से मूर्छित हो जाते हैं। तव नेपथ्य में देवि अरुन्धती हम पृथ्वी और गंगा दोनों पवित्र ब्रत वाली वधू सीता को आपको अर्पण कर रही हैं। आप हमें अनुग्रहीत करें।' यह सुनाई पड़ता है। अरुन्धती सीता को लेकर प्रविष्ट होती हैं। सीता स्वामी की परिचर्या कर उन्हें स्वस्थ करती हैं। वाल्मीकि भी लवकुश को समर्पित करते हैं। इसी बीच लवणासुर को मारकर शत्रघ्न भी आ जाते हैं। चारों ओर प्रसन्नता का वातावरण छा जाता है।

पात्र परिचय

पुरुषपात्र

अष्टावक्रः- एक मुनि
कञ्चुकी - अन्तःपुर में रहने वाला वृद्ध ब्राह्मण
कुशः- राम के पुत्र
चन्द्रकेतुः- लक्ष्मण-पुत्र
जनकः - राम के श्वसुर
दुर्मुखः - गुप्तचर
नटः - सूत्रधार का सहयोगी
रामः - (रामचन्द्रः) अयोध्याधिपति सूर्यवंशीय राजा, नाटका का नायक
लक्ष्मणः- राम के छोटे भाई
लवः - राम के पुत्र
वाल्मीकिः- रामायण के रचयिता
विद्याधरः- देवयोनी विशेष
शत्रुघ्नः - लक्ष्मण के छोटे भाई
शम्बूकः - शुद्र तपस्वी
सुमन्त्रः - सारथी
सूत्राधारः- नाटक का प्रारम्भकर्ता रंगमंच का अध्यक्ष
सौघातिकः- वाल्मीकि का शिष्य
मुनि कुमार और सैनिक आदि

स्त्रीपात्र

अरुन्धती- वशिष्ठ मुनी की पत्नी
आत्रेयी - एक ब्रह्मचारिणी
कौशल्या- राम की माता
तमसा - एक नदी की अधिष्ठात्री देवी
पृथ्वी - सीता की माता
प्रतीहारी- अन्तःपूर की द्वारपालिका
भागीरथी- गंगा जी
मुरला - एक नदी की अधिष्ठात्री देवी
वासन्ती - वन देवता, सीता की सखी
विद्याधरी- विद्याधर की पत्नी
सीता - राजा जनक की पुत्री, राजा राम की पत्नी, नाटक का नायिका

उत्तररामचरित में करुण रस

न हि रसादृते कश्चिदर्थ प्रवर्तते- इस प्रसिद्ध सूक्ति को अनुसरन करते हुए कालिदास आदि कवियों ने अपने नाटक में रस का सृजन किया है। नाटक के नियमानुसार नाटक में श्रृङ्गार अथवा वीर अङ्गीरस होता है किन्तु भवभूति ने इस नियम का उल्लङ्घन करके उत्तररामचरित नाटक में करुण रस को अङ्गीरस के रूप में प्रतिष्ठापित किया। इसलिए तृतीय अङ्क के प्रथम श्लोक में लिखतें हैं-

पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः॥

विरह व्यथा से युक्त राम का करुण रस पुटपाक के सदृश है।

करुण रस के प्रतिष्ठापक आचार्य भवभूति के मतानुसार करुण ही एकमात्र रस है। अन्य रस करुण रस का ही परिणाम है। तृतीय अङ्क के अन्त में लिखते हैं-

एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्भिन्नः पृथक्पृथगिव श्रुयते विवर्तान्।
आवर्तबुद्बुदतरङ्गमयान्विकारानम्भो यथा सलिलमेव तु तत्समस्तम्॥ ४७

एक ही करुण रस विभावादियों से भिन्न भिन्न होकर पृथक् पृथक् परिणामों को प्राप्त करता है। जैसे एक ही जल बुलबुला और लहर आदि विकारो को प्राप्त करता है।

कुछ पण्डितों के मतानुसार प्रेमी-प्रेमिका में से एक के लोकान्तर चले जाने पर अथवा नष्ट होने पर यदि पुनर्मिलन की सम्भावना से कोइ विलाप करता है तो वहाँ करुण-विप्रलम्भश्रृङ्गार होता है। इसलिए उत्तररामचरित में करुण-विप्रलम्भश्रृङ्गार रस है। किन्तु अन्य कुछ विद्वानों ने इसका खण्डन किया हैं। उनके अनुसार वह प्रेमी-प्रेमिकाओं के लिए है किन्तु राम-सीता जैसे दम्पती के लिए नहीं। और पुनर्मिलन का आशा तो राम के मन में था ही नहीं इसलिए अश्वमेध यज्ञ में स्वर्णसीता का स्थापना किया गया। अतः उत्तररामचरित में करुण रस ही मुख्य रस है।

उत्तररामचरित में अलङ्कार

उत्तररामचरित में कुल ३५ अलङ्कार है

उपमा ४७	अर्थापत्ति ५	यमक १
उत्प्रेक्षा २८	सन्देह ४	विभावना- १
काव्यलिंग १७	दृष्टान्त ४	अनुप्रास – १
अर्थान्तरन्यास १३	परिसंख्या ३	समाहित – १
संकर १२	पर्याय २	अप्रस्तुतप्रशंसा – १
रूपक ११	दीपक – २	श्लेष – १
तुल्ययोगिता१०	विरोधाभास –२	अपहति – १
संसृष्टि ८	विशेषोक्ति २	तद्गुण – १
निदर्शना ७	आक्षेप – २	भाविक – १
बिषम ६	अनुमान - १	उल्लेख – १
स्वभावोक्ति५	परिणाम १	व्यतिरेक १
अतिशयोक्ति ५	स्मरण १-	

उत्तररामचरित में छन्द

उत्तररामचरित में कुल १९ छन्द है

अनुष्टुप	९१	इन्द्रवज्रा और उपजाति	६
शिखरिणी	३१	पुष्पिताग्रा	५
वसन्ततिलका	२६	द्रुतविलम्बित	२
शार्दूलविक्रीडित	२५	पृथ्वी	३
मालभारिणी	१	मंजुभाषिणी और हरिणी	८
आर्या	१	प्रहर्षिणी	७
वंशस्थ	१	मन्दाक्रान्ता	१३
मालिनी	१७		
रथोद्धता	३		
शालिनी	५		

उत्तररामचरित में पञ्च अर्थप्रकृति

जो नाटक के मूल कथानक को फलप्राप्ति की ओर रोचकता के साथ अग्रसर करता है वह अर्थप्रकृति है। अर्थप्रकृति पांच होती है- बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी तथा कार्य।

बीजं बिन्दुः पताका च प्रकरी कार्यमेव च।
अर्थप्रकृतय पञ्च ज्ञात्वा योज्या यथाविधि॥

बीज-

बीज का लक्षण-

अल्पमात्रं समुद्दिष्टं बहुधा यद्विसर्पति।
फलस्य प्रथमो हेतुर्बीजं तदभिधीयते॥

उत्तररामचरित के प्रथम अङ्क में नट का वचन-

देव्या अपि हि वेदेह्याः साऽपवादो यतो जनः।
रक्षोगृहस्थितिर्मूलमग्निशुद्धौ त्वनिश्चय॥

लोग पवित्रता से पूर्ण सीता पर भी लाञ्छन लगाने वाले है। रावण के घर में निवास उसकी जड़ है। अग्निपरीक्षा के विषय में भी सन्देह है। इस श्लोक में बीज नामक अर्थप्रकृति का संकेत किया है।

बिन्दु –

अवान्तरार्थविच्छेदे बिन्दुरच्छेदकारणम्।

उत्तररामचरित के तृतीय अङ्क के आरम्भ में **मुरला – सखि तमसे, प्रेषितास्मि भगवतोऽगस्त्यस्य पत्न्या लोपामुद्रया सरिद्वरां गोदावरीमभिधातुम्। जानास्येव यथा वधूपरित्यागात्प्रभृति-**

अग्निभिन्नोगभीरत्वादन्तगूढघनव्यथः।
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः॥

राम का दयनीय स्थिति करुण रस के माध्यम से वर्णन बिन्दु है। जो शम्बुक वृत्तान्त आदि विभिन्न घटनाओं से नाटक के मूलकथा को पुनः जोड़ता है।

पताका-

व्यापि प्रासङ्गिकं वृत्तं पताकेत्याभिधीयते।

उत्तररामचरित में चतुर्थ तथा पञ्चम अङ्क में लव का प्रसङ्ग पताका नामक अर्थप्रकृति है।

प्रकरी-

प्रासङ्गिकं प्रदेशस्थं चरितं प्रकरी मता।

जो नाटक के मूलकथा का एक भाग तक सीमित रहती है उसे प्रकरी कहते है। जैसे उत्तररामचरित में शम्बुक वृत्तान्त।

कार्य-

समापनं तु यत्सिद्ध्यै तत्कार्यमिति सम्मतम्।

उत्तररामचरित में राम-सीता का पुनर्मिलन कार्य नामक अर्थप्रकृति है।

उत्तररामचरित में पञ्च कार्यावस्था

नाटक के फलप्राप्ति के लिए नायक का विभिन्न शारिरीक तथा मानसिक व्यापार को अवस्था कहतें है। ये पांच प्रकार है

अवस्था पञ्चकार्यस्य प्राकब्धस्य फलार्थिभिः।

आरम्भयत्नप्राप्त्याशानियताप्तिफलागमाः॥

आरम्भ-

भवेदारम्भ औत्सुक्यं यन्मुख्यफलसिद्धये।

उत्तररामचरित में भगवान वशिष्ट के प्रति राम का उक्ति-

स्नेहं दया च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।

आराधनाय लोकानां मुञ्चतो नास्ति में व्यथा॥

प्रजा के कल्याण के लिए स्नेह, दया, सुख और सीता का भी परित्ययाद करते हुए मुझे कोई व्यथा नहीं है। इस वाक्य में आरम्भ नामक कार्यावस्था है।

प्रयत्न-

प्रयत्नस्तु फलावाप्तौ व्यापारोऽतित्वरान्वितः।

फल के प्राप्त न होने पर मुख्य व्यापार को त्वरान्वित करना ही प्रयत्न नामक कार्यावस्था है। उत्तररामचरित के प्रथम अङ्क में राम का वाक्य –

हा हन्त हन्त सम्प्रति विपर्यस्तो जीवलोकः। आद्यावसितं जीवितप्रयोजनं रामस्य। शून्यमधुना जीर्णारण्यं जगत्। असारः संसारः। काष्ठप्रायं शरीरम्। अशरणोऽस्मि। किं करोमि। का गतिः अथवा

दुःखसंवेदनायैव रामे चैतन्यमागतम्।

मर्मोपघातिभिः प्राणैर्वज्रकीलायितं हृदि॥

हा अम्ब अरुन्दति, भगवन्तौ वसिष्टविश्वमित्रौ, भगवन् पावकः, हा देवी भूतधात्रि, हा तात जनकः, हा मातः, हा प्रियसखे महाराजसुग्रीव, सौम्य हनुमन्, महोपकारिन् सङ्काधिपते विभीषण, हा सखि त्रिजटे, परिमुषिताः स्थ, परिभूताःस्थ रामहतकेन। अथवा को नाम तेषामहमिदानीमाह्वाने।

यहां प्रयन्त नामक कार्यावस्था है।

प्राप्त्याशा-

उपायापायशङ्काभ्यां प्राप्त्याशा प्राप्तिसम्भवः।

उपाय की स्थिति होने पर भी विघ्न की शंका से जहां फल प्राप्ति की सम्भावना मात्र होती है उले प्राप्त्याशा कहते है।

उत्तरमाचरित के तृतीय अङ्क में सीतास्पर्श से राम बोलते हैं-

(सीता ससंभ्रमं हस्तमाक्षिप्यापसर्पति)

रामः- हा धिक् प्रमादः

करपल्लवः स तस्या सहसैव जडो जडात्परिभ्रष्टः।
परिकम्पिनः प्रकम्पी करान्मम खिद्यतः स्विद्यन्॥

निश्चेष्ट कम्पायमन तथा पसीने से युक्त सीता का वह पल्पव तुल्य हाथ स्तब्द कम्पायमान और स्वेदयुक्त मेरे हाथ से सहसा छुट गया। यहां से प्राप्त्याशा नामक कार्यावस्था है।

नियताप्ति-

अपायाभावतः प्राप्तिर्नियताप्तिस्तु निश्चिता।

उत्तररामचरित के सप्तम अङ्क में सीता को स्वयं का तिरस्कार करने से मना करती हुई गङ्गा और पृथ्वी कहती है-

जगन्मङ्गलमात्मानं कथं त्वमवमन्यसे।
आवयोरपि यत्सङ्गात्पवित्रत्वं प्रकृष्यते॥

तुम संसार के लिए कल्याणकारी अपने आपको क्यों अपमानित कर रही हो क्योंकि जिस तुम्हारे शरीर के संसर्ग से हम दोनो की भी पवित्रता उत्कृष्ट हो रही है। इसमें नियताप्ति नामक कार्यावस्था दृष्टिगत है।

फलागम-

साऽवस्था फलयोगः स्याद्यः समग्रफलोदयः।

समग्र रूप से फलप्राप्ति को ही फलागम कहते है। उत्तररामचरित के सप्तम अङ्क में राम के साथ सीता तथा अपने पुत्रों से मिलन फलागम नामक कार्यावस्था है।

इस पाठ में उत्तररामचरित नाटक का सामान्य परिचय है, जिससे जिज्ञासु पाठक का सरलता से प्रवेश होगा।

धन्यवाद